विपश्यना

साधकों का
मासिक प्रेरणा पत्र

वार्षिक शुल्क रु. 30/-
आजीवन शुल्क रु. 500/-

बुद्धवर्ष 2556, माघ पूर्णिमा, 25 फरवरी, 2013 वर्ष 42 अंक 9

For Patrika in various languages, visit: http://www.vridhamma.org/Newsletter_Home.aspx

धम्मवाणी

तपेन ब्रह्मचरियेन, संयमेन दमेन च।
एतेन ब्राह्मणो होति, एतं ब्राह्मणमुत्तमं'ति।।
-- (सुत्तनिपात ६६०, वासेट्ठसुत्तं)

-- कोई भी साधक तप, ब्रह्मचर्य (धर्मसाधना), इंद्रियसंयम एवं चित्त के दमन द्वारा ही 'ब्राह्मण' कहलाने का अधिकारी होता है। ऐसे साधक को ही 'उत्तम ब्राह्मण' कहते हैं।

जन्म से नहीं, कर्म से ब्राह्मण

एक समय भगवान इच्छानंगल वन-खण्ड में विहार करते थे। उस समय वहां अनेक प्रसिद्ध धनवान ब्राह्मणों का निवास था। उनमें पौष्करसाति और तारुक्ष नामक दो प्रसिद्ध ब्राह्मण आचार्य थे। उन दोनों के वाशिष्ट और भारद्वाज नाम के दो शिष्य थे, जिनमें इस बात की बहस चल पड़ी कि कोई ब्राह्मण कैसे होता है?

भारद्वाज की यह मान्यता थी कि कोई माता से भी और पिता से भी सुजात होता है। उसके माता-पिता दोनों के सात पीढियों तक के पुरखे विशुद्ध वंश वाले होते हैं। इससे वह ब्राह्मण होता है। वाशिष्ट युवक का कथन था कि कोई शीलवान और व्रत-संपन्न होता है तभी वह ब्राह्मण होता है। जब दोनों की बातचीत में कोई सच्चाई निर्धारित नहीं हुई तो वे भगवान बुद्ध के पास पहुँचे और अपना परिचय देकर जातिवाद के विषय में जो विवाद था कि कोई जन्म से ब्राह्मण होता है या कर्म से- इसे समझाने के लिए उनसे प्रार्थना की।

भगवान ने उन्हें सभी प्राणियों के जाति-भेद के बारे में कारणसहित विस्तार से बताया। सभी प्राणियों की जाति एक-दूसरे से अलग है। विभिन्न प्रकार के पेड़-पौधे और घास की जातियां एक-दूसरे से भिन्न हैं। कीट-पतंग और चीटियों की जाति के लिंग अलग हैं। विभिन्न प्रकार के सांपों, जलचरों, मछलियों और आकाशचारी पक्षियों के लिंग अलग-अलग हैं। इस प्रकार का जाति-चिह्न मनुष्यों में अलग-अलग नहीं है। दूसरे प्राणियों की शरीर संरचना में उनके शरीर के प्रत्येक अंग अलग-अलग प्रकार के होते हैं। जबकि सभी मनुष्यों के शरीर के सभी अंग अलग-अलग प्रकार के नहीं, एक ही प्रकार के होते हैं।

मनुष्यों में भेद सिर्फ बाहरी पहचान में है। जो मनुष्य गौ-पालन से जीविका करता है, वह कृषक होता है। जो सामान ढोने का काम करता है, वह मजदूर होता है। जो मनुष्य किसी शिल्प से, कारीगरी से, कला से जीविका करता है - वह अपने-अपने शिल्प के अनुसार कुम्हार, लुहार, बढ़ई आदि कहलाता है। जो कोई व्यापार से जीविका अर्जित करता है वह बनिया कहलाता है। जो मनुष्य किसी दूसरे का धन चुरा कर जीता है वह चोर है। जो अस्त्र-शस्त्र के सहारे जीविका अर्जित करता है. वह सैनिक कहलाता है। जो गांव-धरती का उपभोग करके जीता है वह राजा होता है। इनमें से कोई ब्राह्मण नहीं है।

फिर भगवान ने बताया कि कोई मनुष्य किसी विशिष्ट माता की योनि से उत्पन्न होने के कारण भी ब्राह्मण नहीं हो जाता। उन्होंने आगे बताया कि किस प्रकार के गुणों को धारण करने से कोई व्यक्ति ब्राह्मण होता है :--

जो संग्रही नहीं है, अपरिग्रही है, जो संग और आसक्ति से विरत है, सारे भव-संयोजनों को काट कर निर्भय हो गया, जिसने क्रोध और तृष्णा को मन से निकाल दिया, जिसने (उन दिनों की प्रचलित ६२ प्रकार की) विभिन्न मान्यताओं के बंधनों को तोड़ दिया, जो बोधियुक्त (ज्ञानी) हो गया, उसे मैं ब्राह्मण कहता हूं।

ब्राह्मण मैं उसे कहता हूं जो अपने चित्त को दूषित किये बिना अपमान और पीड़ा को सहन करता है, क्षमा ही जिसका बल है, जो अक्रोधी, व्रती, शीलवान, बहुश्रुत, संयमी और अंतिम शरीर वाला है, जो कमल के पत्ते पर जल की भांति भोगों में लिप्त नहीं होता, जिसमें ईर्ष्या, अहंकार और राग-द्वेष आरे की नोक पर सरसों की भांति नहीं ठहर सकते, जिसने इसी जन्म में अपने दुःखों का विनाश करके अपने बोझ को उतार फेंका, जो गंभीर प्रज्ञा वाला, मेधावी, मार्ग-अमार्ग का ज्ञाता, सत्यवान है, जो गृहस्थ और गृह-त्यागी दोनों में ही लिप्त नहीं होता, जो किसी भी प्राणी की न हत्या करता है, न किसी को प्रेरित करता है, जो विरोधियों के बीच विरोध-रहित और दंडधारियों के बीच दंड-रहित, संग्राहियों के बीच संग्रहरहित है, जो आदरयुक्त, मृदु तथा सच्ची वाणी बोलता है, जिससे किसी को पीड़ा नहीं पहुँचे, ऐसे गुणों से संपन्न व्यक्ति को ही मैं ब्राह्मण कहता हूं।

इसी प्रकार भगवान ने ब्राह्मण के गुणों की और व्याख्या की-- जो पुरुष संसार में बिना दी हुई किसी भी वस्तु को नहीं लेता, जो लोक और परलोक के विषय में आसक्तिरहित है, जिसने परमसत्य को जान लिया है, जो निर्वाण (मोक्ष) का मार्ग बताने वाला है, जो शोक-रहित, निर्मल और शुद्ध है, जो पाप-पुण्य दोनों के प्रति आसक्ति-रहित है, जिसकी सभी जन्मों की तृष्णा नष्ट हो गयी, जिसने जन्म-मरण के चक्कर में डालने वाले मोह को त्याग दिया, जो भोगों को छोड़ कर संन्यासी हो गया, जो लोकीय और दिव्य किसी भी बंधन में आसक्त नहीं है, जो रति और अरति को छोड़ कर शीतल-स्वभाव, क्लेश-रहित है, ऐसे सर्वलोक विजयी को मैं ब्राह्मण कहता हूं, जो प्राणियों की मृत्यु और उत्पत्ति को भली प्रकार जानता है, जो आसक्ति रहित सुगत और बोधियुक्त (ज्ञानी) है, उसे मैं ब्राह्मण कहता हूं, जिसकी गति देव, गंधर्व और मनुष्य नहीं जानते, जो क्षीणास्रव और अरहत है, जिसके पूर्व, पश्चात और मध्य में कुछ नहीं है, जो परिग्रह-रहित है, जो पूर्व जन्म को जानता है, स्वर्ग और कुगति को देखता है, जिसका पुनर्जन्म क्षीण हो गया, जिसके सारे कृत्य समाप्त हो गये, जो अभिज्ञानी मुनि है, उसे मैं ब्राह्मण कहता हूं।

जन्म से न कोई ब्राह्मण होता है, न जन्म से अब्राह्मण। कर्म से ब्राह्मण होता है और कर्म से ही अब्राह्मण। कर्म से कृषक होता है और कर्म से शिल्पी। कर्म से बनिया होता है और कर्म से ही मजदूर।

कर्म से चोर होता है और कर्म से ही सैनिक। कर्म से याचक होता है और कर्म से ही राजा। इस प्रकार कर्म-विपाक को जानने वाले पंडित इस जन्म को यथार्थ से जानते हैं। लोक कर्म से चल रहा है, प्रजा कर्म से चल रही है। चलते हुए रथ के पहिये की धुरी की भांति प्राणी कर्म से बंधे हैं। तप, ब्रह्मचर्य, संयम और दम - इनसे ब्राह्मण होता है, इन गुणों को धारण करने वाला ही उत्तम ब्राह्मण है।

वे दोनों तो युवक थे, परंतु ब्राह्मण समाज के बड़ी उम्र के लोग भी इस विषय पर चर्चा करते रहते थे।

भगवान बुद्ध के जीवन काल की एक घटना। एक बार जब वे अनाथपिंडिक के जेतवन में ठहरे हुए थे, श्रावस्ती में भिन्न-भिन्न स्थानों से आये हुए ५०० ब्राह्मण वहां एकत्र हुए। उनमें यह चर्चा चली कि गौतम ऊंच-नीच का भेदभाव नहीं करता। नीची से नीची जाति के व्यक्ति को भी धर्म सिखाता है और पूज्य बनाता है। हम उससे इस विषय पर विवाद कर नहीं सकते।

उन ब्राह्मणों में से एक आश्वलायन युवक होते हुए भी वैदिक ग्रंथों में पारंगत था। लगता है यही आश्वलायन आगे जाकर उपनिषद काल का पंडित हुआ होगा। अतः ब्राह्मणों ने आश्वलायन को इस लायक समझा और उसे इस विषय पर गौतम बुद्ध से वाद करने के लिए तैयार किया। यद्यपि वह बार-बार कहता रहा कि बुद्ध धर्मवादी है, उससे विवाद करना कठिन है। पर उन ब्राह्मणों के दबाव में आकर आश्वलायन बुद्ध से वाद करने के लिए तैयार हो गया।

जब वह बुद्ध से मिला तो उसने कहा कि ब्राह्मण वर्ण ही श्रेष्ठ है, अन्य वर्ण हीन है। ब्राह्मण शुक्लवर्णी है, अन्य लोग कृष्णवर्णी। ब्राह्मण वर्ण ही शुद्ध होता है, अब्राह्मण वर्ण नहीं। ब्राह्मण ब्रह्मा के औरस पुत्र हैं, उसके मुख से उत्पन्न हुए हैं, वे ही उसके वास्तविक उत्तराधिकारी हैं।

तब भगवान ने कहा -- आश्वलायन! ब्राह्मणों की स्त्रियां भी ऋतुमती, गर्भवती होती हैं, बच्चे को जन्म देती हैं, उसे दूध पिलाती हैं। तो यह कैसे मान लिया जाय कि वे ब्रह्मा के मुख से उत्पन्न हुए हैं?

आश्वलायन निरुत्तर था।

-- और किसी ब्रह्मा ने मनुष्य जाति में ऊंच-नीच का विधान किया हो तो पड़ोसी देशों में और भारत के अन्यान्य सीमांत प्रदेशों में - आर्य और दास दो ही वर्ण क्यों होते हैं? वहां कोई आर्य हो तो दास हो सकता है और दास हो तो आर्य हो सकता है। आश्वलायन ने स्वीकार किया कि उन देशों-प्रदेशों में ऐसा होता है।

तब भगवान ने कहा कि किस विशेषता से ब्राह्मण अपने को ब्रह्मा का उत्तराधिकारी मानते हैं?

आश्वलायन के पास कोई उत्तर नहीं था।

फिर भगवान ने कहा कि कोई क्षत्रिय हो, परंतु हिंसक हो, चोर हो, व्यभिचारी हो, कटु-भाषी हो - तो वह मरने पर नरक में ही जायगा। इसी प्रकार वैश्य और शूद्र की भी बुरी गति होगी। तो क्या ऐसे ही दुर्गुणों से युक्त ब्राह्मण नरक में नहीं जायगा?

आश्वलायन के पास कोई उत्तर नहीं था।

ऐसे ही कोई व्यक्ति यदि सदाचारी होगा तो मरने के बाद वह स्वर्गगामी होगा, चाहे वह किसी जाति का व्यक्ति हो।

आश्वलायन निरुत्तर था।

भगवान ने कहा कि कोई व्यक्ति ब्राह्मण हो अथवा अब्राह्मण नदी-घाट पर साबुन लेकर अपने शरीर का मैल छुड़ाने में समर्थ है, तो इसमें ब्राह्मण की क्या विशेषता है? ऐसे ही मेरे पास आने पर किसी भी जाति का व्यक्ति अपने मन का मैल उतार कर धार्मिक हो सकता है। आवश्यक नहीं कि वह ब्राह्मण जाति का हो। शीलवान, धार्मिक होने का सबको अधिकार है और ऐसा होने पर सबको एक जैसा फल मिलता है। ऐसे साधक को ही मैं उत्तम ब्राह्मण कहता हूं। कोई भी साधक, किसी भी जाति या वर्ण का हो, वह तप, ब्रह्मचर्य, इंद्रिय-संयम एवं चित्त के दमन द्वारा ही 'ब्राह्मण' कहलाने का अधिकारी होता है। ऐसे साधक को ही 'उत्तम ब्राह्मण' कहते हैं। नीच कुल में जन्मे हुए व्यक्ति भी अपने आचरण से शुद्धि प्राप्त कर सकते हैं।

आश्वलायन फिर निरुत्तर था।

-- यदि कोई ब्राह्मण युवक अब्राह्मण युवती से विवाह करे, अथवा कोई अब्राह्मण युवक किसी ब्राह्मणी से विवाह करे और उनसे जो संतान हो, उसे क्या कहोगे? श्रेष्ठ वर्ण या नीच वर्ण?

आश्वलायन निरुत्तर था।

किसी घोड़े का गधी से संयोग हो जाय तो उनकी संतान को न घोड़ा कहेंगे न गधा, बल्कि खच्चर कहेंगे। ऐसे ही ब्राह्मण और अब्राह्मण की संतान को क्या कहोगे? क्या उसे ब्राह्मण कह कर श्रेष्ठ कहोगे या अश्रेष्ठ? कैसे भेद करोगे? मनुष्य मनुष्य है। कोई भेदभाव नहीं। ब्राह्मण वर्ण का हो अथवा अन्य वर्ण का; शीलवान, धार्मिक होने का सबको अधिकार है और सबको एक जैसा फल मिलता है।

दुर्भाग्य से देश में बुद्ध के हजारों वर्ष पहले से ही जात-पांत, ऊंच-नीच, छूआछूत का कलंक बहुत पुरातन काल से चला आ रहा था। कोई चांडाल दिख जाने पर अशुभ माना जाता था। उसको छूना तो दूर, उसकी छाया भी पड़ जाय तो नहाना पड़ता था। इसलिए कोई चांडाल अन्य मनुष्यों के समूह में आता तो ताली बजाते हुए, घंटी की आवाज करते हुए आता, ताकि लोग पहले से ही उससे दूर हो जायँ। किसी चांडाल का दिख जाना भी अशुभ माना जाता था। चांडाल दिख जाय तो कोई-कोई सुगंधित द्रव्य से अपनी आंखें धोते थे। बहुधा चांडाल की छाया पड़ जाने पर लोग उसे पीटते थे। चांडाल नजरें नीची रख कर ही गांव में प्रवेश करते थे।

इससे लगता है कि बुद्ध के बाद भी चांडाल मृत शव ढोने का, श्मशान की रक्षा का काम करते थे और चांडालों को रहने के लिए अलग गांव होते थे। मृत्यु के बाद उनको जलाने के लिए श्मशान भी अलग रहता था।

चांडाल व्यक्ति के अतिरिक्त कई अन्य जाति वालों को भी नीच माना जाता था। ये हीनकुल थे - नेसादकुल यानी बांस की टोकरी बनाने वाले। चम्मकारकुल याने मरे हुए पशु की चमड़ी से वस्तुएं बनाने वाले। पुक्कुसकुल यानी मैला, कचरा उठाने वाले भंगी।

चांडाल कुल के व्यक्ति वृषल माने जाते थे। भगवान ने सही माने में वृषल कौन होता है, इसका विवरण दिया -- जो नर क्रोधी, वैरी, पापी, ईर्ष्यालु, मिथ्यामतधारी, मायावी है; जो हिंसक, अत्याचारी, चोर और व्यभिचारी है; जो वृद्ध माता-पिता का पोषण नहीं करता; दूसरों को सताता है; ब्राह्मण, श्रमण या अन्य याचक को धोखा देता है; अनर्थकारी बात बोलता है; पापकर्म करके छिपाता है; अपनी बड़ाई और दूसरे की अवहेलना करता है; जो रुष्ट, पेटू, बुरी इच्छावाला, कंजूस और शठ है; बुरे कर्म करने में लज्जा-भय नहीं मानता; जो अर्हंत न होते हुए अपने को अर्हंत बताता है, वह अधम, वृषल है। कोई जाति से वृषल नहीं होता और न ही जाति से ब्राह्मण होता है। कर्म से वृषल होता है और कर्म से ही ब्राह्मण। अकुशल कर्म करने वाला ब्राह्मण चांडाल के समान होता है।

भगवान ने कहा-- ''मैं ब्राह्मणी-माता से पैदा होने के कारण किसी को ब्राह्मण नहीं कहता। जिसके पास कुछ नहीं है और जो कुछ नहीं लेता है, उसे मैं ब्राह्मण कहता हूं। न जटा से, न गोत्र से, न जन्म से ब्राह्मण होता है; जिसमें सत्य और धर्म है, वही व्यक्ति पवित्र है और वही ब्राह्मण है।

भगवान ने हमेशा जाति की अपेक्षा विद्या और आचरण दोनों को ही महत्त्व दिया और इन पर ही जोर दिया। *(शेष क्रमशः पृष्ठ ४ पर)*..

अतिरिक्त उत्तरदायित्त्व

भिक्षु आचार्य -- १. भदंत उ. रतनपालजी, श्रीमती रतवत्ते सहित श्रीलंका के सभी केंद्र-आचार्यों को मार्गदर्शन एवं सहयोग

आचार्य

१. श्री विमलचंदजी सुराना, जयपुर. प्रमुख आचार्य की सहायता
२. कु. प्रीति डेढिया, मुंबई. विपश्यना विशोधन विन्यास के टेप विभाग एवं इसकी वेबसाइट की सेवा
३. श्री अरुण सूर्यवंशी, नाशिक. सहायक आचार्यों की ट्रेनिंग में सहायता
4. Mr. Vitcha Klinpratoom, To assist Centre Teacher in serving Dhamma Canda Pabhā, Thailand
5-6. Dr. Khin Maung Aye & Dr. Daw Kyi Sein, UK, To conduct courses in Prisons
7. Ms. Andrea Schmitz, Germany, To assist Ms. Floh Lehmann to serve Ukraine

वरिष्ठ सहायक आचार्य

१-२. श्री रामकृष्ण एवं श्रीमती सरोज बांते, धम्म वसुधा, वर्धा के केंद्र-आचार्य की सहायता
३. श्री रामदयाल असावा, धम्म सुवत्थि, श्रावस्ती के केंद्र-आचार्य की सहायता
४-५. श्री राजकुमार एवं श्रीमती सरोजिनी चौहान, धम्म लक्खन, लखनऊ के केंद्र-आचार्य की सहायता
६. श्री प्रेमचंद सुंगर, धम्मधज, होशियारपुर के केंद्र-आचार्य की सहायता
७. श्री रोहणीकांत शर्मा, धम्मविपुल, मुंबई के केंद्र-आचार्य की सहायता
८. श्री भिंबार सिंह थापा, धर्मशृंग, नेपाल के केंद्र-आचार्य की सहायता
9. Mr. Martin Haig, To assist the Centre teacher in serving Dhamma Āloka, Australia
10. Ms. Anna Schlink, To assist the centre Teachers in serving Dhamma Passaddhi, Australia
11. Ms. Puangpaka Bunnag, To assist the centre Teachers in serving Dhamma Sīmanta, Thailand
12-13. Mr. Arthur Rosenfeld & Mrs. Ana Teixido, the Netherlands To assist Mr. Chris Weeden to serve the Netherlands
14-15. Dr. Teun Zuiderent-Jerak- & Mrs. Sonja Jerak-Zuiderent, The Netherlands, To assist Ms. Floh Lehmann to serve Slovenia
16. Mrs. Yenta Trainate, To assist the center teacher in serving Dhamma Dhani, Bangkok, Thailand

सहायक आचार्य

१ श्री अनिल कुमार मौर्य, धम्मचक्क, सारनाथ के केंद्र-आचार्या की सहायता
२. डॉ. पवन गुडला, धम्म नागाज्जुन, नालगोडा के केंद्र-आचार्य की सहायता
३. श्री सर्वेश्वर, धम्म कोण्डञ्ञ, कोंडापुर, केंद्र-आचार्य की सहायता

नये उत्तरदायित्त्व

आचार्य, धर्मप्रसारण सेवा

१. श्री एस. अडवियप्पा, जयपुर
२-३. श्री मुकुंदराय एवं श्रीमती विमला बदानी, कोलकाता
४. डॉ. राजेंद्र चोखानी, मुंबई
५. श्री के. बी. चिकनारायणप्पा, बंगलूरू
६. श्री एल. शिवप्पा, बंगलूरू
७. श्री सुधाकर फुंदे, मुंबई
८. डॉ. एन. पी. सुब्रमण्यम, सिकंदराबाद
९. श्रीमती शांताबेन ठक्कर, गांधीधाम
१० श्रीमती जगदीशकुमारी सिंह, जयपुर
११. कु. ए. गायत्री बालकृष्णनन, इगतपुरी
१२. श्री दिगंबर धांडे, मुंबई. धर्मप्रसारण की सेवा, (केंद्रों से बाहर शिविर लगवा कर)
१३-१४. श्री आनंदराज एवं श्रीमती नानी मैजू शाक्य, नेपाल
15. Mr. Atsushi Itagaki, Japan
16. U Tin Maung Shwe, Myanmar
17-18. Mr. Heinz Bartsch & Mrs. Brunhilde Becker, Germany
19-20. Dr. Tian-Ming Sheu & Dr. (Mrs.) Yuh-Wen Wang, Taiwan

आचार्य, केंद्र दायित्त्व

१. डॉ. निखिल मेहता, धम्मपुण्ण, पुणे
२. श्री बाबूराव शिंदे, धम्मअजय, चंद्रपुर
३. श्री प्रकाश महाजन, धम्मसरोवर, धुळे एवं धम्मभूसन, भुसावल
४. श्री भानुदास रसाळ, धम्मछत्तपति, फल्टन
५. श्रीमती मनमोहिनी रस्तोगी, धम्मपट्ठान, सोनीपत
६. श्री रामनिवास गौतम, धम्मकारुणिका, करनाल
७. श्री प्रमोद भावे, धम्मलद्ध, लद्दाख
८. श्री अशोक कुमार नागपाल, धम्मसलिल, देहरादून
९. श्री कृष्णलाल शर्मा, धम्मधज, होशियारपुर, पंजाब
१०. श्रीमती बीना मेहरोत्रा, धम्मचक्क, सारनाथ
११. श्री रुद्रदत्त तिवारी, धम्मलक्खन, लखनऊ
१२. श्रीमती प्रमिला शाह, धम्मबल, जबलपुर
१३. श्रीमती शीला केला, धम्ममालवा, इंदौर
१४. श्री बिक्रम डांडिया, धम्मबोधि, बोधगया
१५. श्री मोहन दीवान, धम्मपुब्बोत्तर, मिजोरम
१६. श्री अनंत जेना, धम्मभुबनेश्वर, उड़ीसा
१७. श्री वी. संथनगोपालन, धम्मसेतु, चेन्नई
१८. श्रीमती जया संगोई, धम्मपफुल्ल, बंगलूरू
१९. श्रीमती रेणुका मेहता, धम्ममधुरा, मदुराई .
20-21. Mr. Roy Menezes & Mrs. Suleka Puswella, Dhamma Vaddhana, USA
22-23. Mr. Christian & Mrs. Rosi Hild, Dhamma Sumeru, Switzerland
24. Mrs. Nani Chhori Bajracharya Dhamma Janani, Nepal
25. Mr. Narayan Prasad Tiwari, Dhamma Citavana, "
26. Mr. Adi Ratna Shakya, Dhamma Kitti, "
27. Mr. Sheel Bahadur Bajracharya, Dhamma Pokhara, "
28. Mr. Francois Kuoch, Dhamma Latthika, Combodia
29-30. Mr. Gregory & Mrs. Irene Wong, Dhamma Mutta, Hong Kong
31-32. Mr. Derek & Mrs. Yukiko Phillips, Dhamma Bhanu, Japan
33. U Thein Htwe, Dhamma Ratana, Myanmar
34-35. Dr. Maung Maung Aye & Daw Yi Yi Win, Dhamma Makuta, "
36. Daw Nyo Nyo Win, Dhamma Manorama "
37. Daw Myat Lay Khaines, Dhamma Mahima, "
38-39. U Htin Aung & Daw Khin Myint May, Dhamma Manohara "
40-41. U Kyi Thein & Daw Tin Tin Yee, Dhamma Mahapabbata "
42. Dr. U Thein Tun, Dhamma Mayuradipa "
43-44. Dr Myo Aung & Daw Khin Than Hmi, Dhamma Pabbata "
45-46. U San Lwin & Daw Tin Tin Naing, Dhamma Hita Sukha Geha "
47. Miss Komudhi Mendis, Dhamma Kuta, Sri Lanka
48. Mr. D. H. Henry, Dhamma Anuradha, Sri Lanka
49. Mr. Ping-San Wang, Dhamma Vikasa, Taiwan
50-51. Mr. Vichit & Mrs. Pornphen Leenutaphong, Dhamma Kañcana, Thailand
52. Ms. Juechan Limchitti, Dhamma Porano "
53. Mrs. Patra Patrabutra, Dhamma Canda Pabha "
54. Mr. German Cano & Mrs. Martha Molina, Dhamma Makaranda, Mexico
55. Ms. Mirjam Berns, Dhamma Venuvana, Venezuela
56. Ms. Macarena Infante, Dhamma Pasanna, Chile
57. Mr. Sean Salkin, Dhamma Aloka, Australia

वरिष्ठ सहायक आचार्य, केंद्र दायित्त्व

१. श्री शिवाजी वानखेडे, शेगांव, *धर्मप्रसारण की सेवा*
२. श्री दिनेश देशमुख, धम्मगोंद, गोंदिया
३. श्री प्रभुदयाल सोनगरा, धम्ममरुधरा, जोधपुर,
४. श्री हरिलाल साहू, धम्मउत्कल, उड़ीसा
५. श्री सुधाकर खैरे, धम्मकेतु, दुर्ग (छत्तीसगढ़)
६. डॉ. ईश्वरचंद सिन्हा, धम्मलिच्छवी, मुजफ्फरपुर
७. श्री पी. रवींद्र रेड्डी, धम्मखेत्त, हैदराबाद
८. डॉ. सत्यनारायण सहा, धम्मनिज्झान, निजामाबाद
९. श्री बी.वी. सत्यनारायण राजू, धम्माराम, भीमावरम
10. Mr. Sergio Borsa, Dhamma Atala, Italy
11. Daw Mi Mi Myine, Dhamma Mandapa, Myanmar
12. U Ba Than, Myanmar, Dhamma Nanadhaja, "
13. U Maung Maung Sein, Dhamma Mitta Yana, "
14-15. U Kyaw Thu & Daw Kyi Kyi Tun, Dhamma Rakkhita, "
16. U Ko Ko, Dhamma Vimutti, "
17. Mr. T. A. Piyasena, Dhamma Sobha, Sri Lanka

नव नियुक्तियां

सहायक आचार्य

१. श्री नरेंद्र कडगे, जयसिंगपुर
२. श्रीमती एम. आर. राजेश्वरी, भिलाई
3. Mr. Laurent Thijs, Belgium
4. Mr. Robert Freese, Ireland
5. U Maung Maung Lwin, Myanmar

Registered No. NSK/235/2012-2014

WPP Postal License No. AR/Techno/WPP-05/2012-2014

आओ, साधको! हम भी भगवान की इस पावन शिक्षा से प्रेरणा पाकर अपना आचरण व कर्म सुधारते हुए सही माने में ब्राह्मण बनें!

कल्याणमित्र,
सत्यनारायण गोयन्का

आवश्यकता है पगोडा पर सुयोग्य मार्ग-दर्शकों की

पगोडा देखने आने वालों की संख्या दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। उन्हें ठीक से समझाने, दिखाने आदि के लिए बहुत ही मृदुभाषी, सुभाषी, समझाने में निपुण सुयोग्य मार्ग-दर्शकों की **बड़ी मात्रा में** आवश्यकता है। साधक कृपया अपने बारे में स्वयं जांच कर पूरे विवरण सहित निम्न ईमेल या फोन से **यथाशीघ्र** संपर्क करें। आने-जाने का खर्च, भोजन, विश्राम, सेवा एवं ध्यान-भावना का लाभ मिलेगा। फोन : 022-28451204, (91) 22-33747501 (30 lines), **ईमेल**-- pr@globalpagoda.org;

दभाड (नांदेड) में बृहद आनापान शिविर का आयोजन

नांदेड शहर से लगभग १४ किमी. की दूरी पर स्थित दभाड नामक गांव में डॉ. बाबासाहब आंबेडकर ने पीपुल्स एजूकेशन सोसायटी की स्थापना की थी। इसके वर्तमान अध्यक्ष डॉ. एस.पी. गायकवाड ने १९८८ में. यहां एक धम्म परिषद की स्थापना की, जिसके प्रथम अधिवेशन में पूज्य भदंत आनंद कौसल्यायनजी की अध्यतक्षता में मुख्य वक्ता के रूप में पूज्य गुरुदेव ने एक घंटे का प्रवचन दिया था। तब से यह परिषद हर साल धर्म के सैद्धांतिक पक्ष को उजागर करती रही है। गत २७ जनवरी को परिषद ने २६वें अधिवेशन में पूज्य गुरुदेव की वाणी में आध घंटे का आनापान सत्र रखा, जो लगभग ४५-४६ हजार लोगों द्वारा ग्रहण किया गया। इतनी बडी संख्या के बावजूद पूरे पंडाल में अखंड शांति बनी रही और अंत में लोगों ने पहली बार धर्म की व्यावहारिक शिक्षा पाकर बहुत प्रसन्नता व्यक्त की।

दभाड के अतिरिक्त अन्य क्षेत्रों से भी भिक्षु आचार्यों तथा स. आचार्यों के माध्यम से बड़ी संख्या में आनापान शिविर का लाभ लेने के समाचार आ रहे हैं। इससे लगता है कि सचमुच धर्म का डंका बज चुका है और यह सारे भारत तथा विश्व में खूब जोरों से फैलेगा।

ग्लोबल पगोडा में (परियत्ति और पटिपत्ति) पालि पाठ्यक्रम-२०१३

आवासीय पाठ्यक्रम:-- ९० दिवसीय : **पालि-अंग्रेजी; अवधि -** १-७-१३ से ३०-९-१३ तक; आवेदन की तिथि-१५-५-१३ तक; आवेदन पत्र-- www.vridhamma.org से भी भेज सकते हैं. **संपर्कः** विपश्यना विशोधन विन्यास (VRI), ग्लोबल विपश्यना पगोडा, एस्सेल वर्ड के पास, बोरीवली (पश्चिम), मुंबई - ४०००९१.

बुद्ध-शिक्षा और विपश्यना पर एक वर्षीय पालि डिप्लोमा कोर्स

वि.वि.वि. (VRI) एवं मुंबई विश्वविद्यालय के दर्शन-विभाग के संयुक्त तत्त्वावधान में वर्ष १३-१४ के लिए **अंग्रेजी माध्यम** से **पालि डिप्लोमा कोर्स** निर्धारित किया गया है, जिसमें भगवान बुद्ध की शिक्षा के सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक पक्षों का निरूपण किया जायगा। **स्थल**- 'ज्ञानेश्वर भवन', दर्शन विभाग, मुंबई विश्वविद्यालय, विद्या नगरी परिसर, कालीना, सांताक्रुज (पूर्व), मुंबई-४०००९८. **आवेदन-पत्र** उक्त स्थल से १ से १५ जुलाई, सोम से शुक्र तक, ११-३० से २-३० बजे के बीच. **कोर्स-अवधि** २०-७-१३ से ३१-३-२०१४ तक. **समय**-- अपराह्न २-३० से सायं ६-३० बजे तक. **योग्यता**-- कम से कम १२वीं उत्तीर्ण छात्रों के लिए, जिन्हें दीवाली अवकाश में विपश्यना शिविर में भाग लेना अनिवार्य होगा.

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें-- डॉ शारदा संघवी - फोन: ०२२- २३०९५४१३, मो. ०९२२३४६२८०५, **ईमेलः** s_sanghvi@hotmail.com; २) श्रीमती बलजीत लाम्बा : फोन: ०९८३३५१८९७९; ३) अलका वेंगुलकर: मो. - ०९८२०५८३४४०.

बुद्धपूर्णिमा के अवसर पर पूज्य गुरुदेव के सान्निध्य में एक दिवसीय महाशिविर

25 मई, 2013, **शनिवार**, **समयः** प्रातः 11 बजे से अपराह्न 4 बजे तक, **'ग्लोबल विपश्यना पगोडा'** के बड़े धम्मकक्ष (डोम) में। कृपया ध्यान दें कि इस विशाल शिविर में आपको किसी प्रकार की असुविधा न हो, इसलिए **बिना बुकिंग कराये न आएं। बुकिंग संपर्क** : **फोन नं.:** 022-28451170, 33747543, 33747544, **(फोन बुकिंग :** प्रातः **11** से सायं **5** तक, प्रतिदिन)
ईमेल Registration: oneday@globalpagoda.org;
Online Regn: www.vridhamma.org

दोहे धर्म के

संप्रदाय की बेड़ियां, जात पांत जंजीर।
धरम चक्र से कट गई, दूर हुई भव पीर॥

जात-पांत के फेर में, छुटा धरम का सार।
सार छुटा निस्सार ही, बना शीश का भार॥

जात-पांत कुल-गोत्र या, वर्ण-भेद ना होय।
जो जो चाखे धरम रस, सो सो सुखिया होय॥

दुष्कर्मों के पंथ पर, खोए होश हवास।
धर्म मिला तो सुख मिला, टूट गए दुख पाश॥

धर्म मिला तो कट गए, अपराधों के फंद।
मानस आलोकित हुआ, मेघ मुक्त ज्यूं चंद॥

केमिटो टेक्नोलॉजीज (प्रा०) लिमिटेड
नं. 8, मोहता भवन, ई-मोजेस रोड, वरली, मुंबई- 400 018
फोन: 2493 8893, फैक्स: 2493 6166
Email: arun@chemito.net
की मंगल कामनाओं सहित

दूहा धरम रा

बाम्मण हो या बाणियों, छत्री सुद्दर होय।
सुद्ध धरम पालण कर्यां, चित निरमळ ही होय॥

जात-पांत रै भेद स्यूं, मिनख हुवै बेहाल।
धन धन गंगा धरम री, न्हावै सो हि निहाल॥

जात वरण रो, गोत रो, जठै भेद ना होय।
जो सैं को मंगळ करै, धरम सांचलो सोय॥

जात पांत री कोढ मँह, धनि निरधन री खाज।
साम्य सुधा जीं दिन मिलै, बीं दिन सुख रो राज॥

धरम न हिंदू बौद्ध है, सिक्ख न मुसलिम जैन।
धरम चित्त री सुद्धता, धरम सांति सुख चैन॥

कथणी करणी बिच इसी, देखी नहीं दुभांत।
कवै जात है करम स्यूं, मानै जन्मां जात॥

एक साधक
की मंगल कामनाओं सहित

'विपश्यना विशोधन विन्यास' के लिए प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक: राम प्रताप यादव, धम्मगिरि, इगतपुरी-422 403, दूरभाष : (02553) 244086, 244076.
मुद्रण स्थान : अक्षर चित्र प्रिंटिंग प्रेस, 69- बी रोड, सातपुर, नाशिक-422 007. **बुद्धवर्ष 2556, माघ पूर्णिमा, 25 फरवरी, 2013**

वार्षिक शुल्क रु. **30/-,** US $ 10, **आजीवन शुल्क** रु. **500/-,** US $ 100. **'विपश्यना' रजि. नं. 19156/71. Registered No. NSK/235/2012-2014**

WPP Postal Licence No. AR/Techno/WPP-05/2012-2014
Posting day- **Purnima of Every Month,** Posted at **Igatpuri-422 403,** Dist. Nashik (M.S.)

If not delivered please return to:-

विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी - 422 403
जिला-नाशिक, महाराष्ट्र, भारत
फोन : (02553) 244076, 244086, 243712,
243238. **फैक्स :** (02553) 244176
Email: info@giri.dhamma.org
Website: www.vridhamma.org